मन्नू भंडारी का कथा-साहित्य

विचार और दृष्टि

सम्पादक

डॉ. सुरेन्द्र शर्मा

समकालीन प्रकाशन

नई दिल्ली-110002

सर्वाधिकार सुरक्षित
लेखक व प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस पुस्तक का कोई भी अंश, किसी भी रूप में या किसी भी प्रकार से इलेक्ट्रॉनिक, मशीनी या फ़ोटोकॉपी या रिकॉर्डिंग द्वारा प्रतिलिपित या प्रेषित नहीं किया जा सकता।

आईएसबीएन : 978-93-92356-92-6

प्रकाशक : **समकालीन प्रकाशन**
फ्लैट नं. 02, प्रथम तल, अंसारी मार्केट,
दरियागंज, नई दिल्ली-110002
ई-मेल : sales.samkaleenprakashan@gmail.com
दूरभाष : 7827484578

संस्करण : प्रथम संस्करण, 2024
आवरण : अमित
सर्वाधिकार : © डॉ. सुरेन्द्र शर्मा
मूल्य : सात सौ रुपये मात्र
मुद्रक : आरना इंटरप्राइजेज, गाज़ियाबाद

Mannu Bhandari Ka Katha Sahitya : Vichar Aur Drishti
Edited By: Dr. Surendra Sharma

Rs. 700/-

अनुक्रमणिका

1. मन्नू भंडारी का जीवन : एक संक्षिप्त सिंहावलोकन 17
-डॉ. सुरेन्द्र शर्मा

2. मन्नू भंडारी की भाषिक विशिष्टता : 'यही सच है' के बहाने 29
-डॉ. राजेंद्र सिंह साहिल

3. स्त्री मन की चितेरी की आत्मकहानी : एक कहानी यह भी 36
-प्रोफेसर वंदना झा, रवि झा

4. मन्नू भंडारी के कथा-साहित्य में मध्यवर्ग 42
-डॉ. शशिकला

5. मन्नू भंडारी के नाटकों में अभिव्यक्त नारी जीवन का संघर्ष 48
-डॉ. मोहित मिश्रा

6. मन्नू भंडारी की कहानियों में नारीवाद 60
-डॉ. दायक राम

7. 'एक इंच मुस्कान' उपन्यास में नारी की मनोवैज्ञानिक दशा 64
-डॉ. जितेन्द्र कुमार

8. मन्नू भंडारी के कथा-साहित्य में आत्मीय अभिव्यक्ति 69
-डॉ. हरप्रीत कौर

9. मन्नू भंडारी की कहानियों में नारी-विमर्श 77
-डॉ. शाहिद हुसैन

10. मन्नू भंडारी की कहानियों में नारी पात्रों के स्वभाव 82
-डॉ. सुप्रिया प्रभाकर जोशी

11. मन्नू भंडारी के उपन्यास 'स्वामी' में अभिव्यक्त आधुनिक नारी की सम्वेदना और नया दृष्टिकोण 95
-डॉ. सुरेन्द्र शर्मा

12. मन्नू भंडारी के उपन्यास 'महाभोज' में चित्रित राजनीतिक समस्याएँ 104
-डॉ. रीना डोगरा

13. महानगरीय बोध के संदर्भ में मन्नू भंडारी का कथा-साहित्य 111
-डॉ. प्रियंका

14. मन्नू भंडारी के कथा-साहित्य में नारी की स्थिति 118
-डॉ. सुरेन्द्रा कुमारी

15. मन्नू भंडारी के कथा-साहित्य में नारी संघर्ष 127
-डॉ. सुमन देवी

16. मन्नू भंडारी के कथा-साहित्य में नारी चित्रण 136
-प्रो. रेखा पी. मेनोन

17. मन्नू भंडारी के कथा-साहित्य में चित्रित नारी के विविध रूप 141
-डॉ. सुरेन्द्र शर्मा

18. मन्नू भंडारी की कहानियों में यथार्थबोध 155
-देवेन्द्र सिंह

19. मन्नू भंडारी के उपन्यास 'महाभोज' में राजनीतिक द्वंद्व 160
-डॉ. आशा

20. मन्नू भंडारी की कहानियों में नारी चेतना 169
-वंदना राणा

21. मजदूर स्त्रियों की यथार्थ तस्वीर : रानी माँ का चबूतरा 177
-लतेश कुमारी

22. मन्नू भंडारी के उपन्यास 'आपका बंटी' में बालमनोविज्ञान 184
-सुदर्शन शर्मा

23. मन्नू भंडारी की कहानियों में अभिव्यक्त स्त्री 192
-कृतिका विश्वकर्मा

24. मन्नू भंडारी की कहानी 'स्त्री सुबोधिनी' में अभिव्यक्त स्त्री स्वर 199
-रजिता, एन. आर.

25. मन्नू भंडारी के उपन्यास 'आपका बंटी' में बालक मन की संवेदना एवं मनोदशा 203
-मोरी पायल एम.

26. मन्नू भंडारी के उपन्यास 'एक इंच मुस्कान' में आधुनिकतावाद और यथार्थवाद 210
-प्रलय कुमार बोड़ो

27. मन्नू भंडारी की कहानियों में नारी संवेदना 217
-मानसी कुमार

28. मन्नू भंडारी का जीवन संघर्ष 223
-शिल्पा देवी

29. मन्नू भंडारी के उपन्यास 'कलवा' में अभिव्यक्त सामाजिक यथार्थ 227
-डॉ. सुरेन्द्र शर्मा

पर आधुनिक जीवन शैली का प्रभाव देखने को मिलता है। यह नाटक नारी की स्वतंत्रता, परिवार और नौकरी आदि की जिम्मेदारियों का निर्वाह करने में आने वाली समस्याओं को प्रस्तुत करता है। नायिका आर्थिक और शिक्षित रूप से परिपूर्ण है, जिसका अपना स्वतंत्र सामाजिक व्यक्तित्व है। पति-पत्नी के संबंधों में तनाव के कारण परिवार बिखरने की स्थिति में पहुँच जाता है। अजित ने शोभा को एम.ए. करवाया कालेज में नौकरी लगवा दी। नौकरी के कारण वह अपने घर और परिवार को पर्याप्त समय देने में असमर्थ हो गयी। अजित, शोभा से नौकरी करने के बाद भी उतना ही समय चाहता था, जितना वह नौकरी से पूर्व देती रही। शोभा के लिए अजित और परिवार को पूर्ण समय देना संभव नहीं हो सका। स्त्री के नौकरी करने पर परिवार जिम्मेदारियों में परिवर्तन होता है। जिसमें नौकरीपेशा स्त्री घर से संबंधित कार्यों को पूर्ण समय देने में असमर्थ हो जाती है, जिससे लिए पति-पत्नी दोनों को सहयोग करते हुए जीवन-यापन करना होता है। परंतु यह नाटक इस समस्या को प्रस्तुत करता है, शोभा कहती है कि "दुनिया के किसी भी कोने में कोई भी खराब काम हो, मैं जिम्मेदार; अप्पी काम नहीं करती, मैं जिम्मेदार; नौकर चला गया, मैं जिम्मेदार; नया नौकर नहीं मिला रहा, मैं जिम्मेदार; नल का पानी चला जाता जय, मैं जिम्मेदार-"[2] सामाजिक संरचना ने परिवार की जिम्मेदारी के लिए स्त्री को अधिकृत कर दिया है। यह नाटक नारी के सामाजिक बंधनों को तोड़ने के लिए व्यवस्था के खिलाफ आवाज उठता है। स्त्री ने अस्तित्व के लिए सामाजिक जीवन में प्रवेश किया। उन्हें दोहरे काम करने पर भी प्रताड़ित किया जाता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन हुआ है। इस दौरान परिवार, संबंध और जीवन शैली में भी निरंतर बदलाव हुआ। स्त्री के लिए परिवार में अकेलेपन का माहौल बन जाता है। स्त्री पति और बच्चों की इच्छाओं के बीच ही रह जाती है। उसके लिए परिवार के सदस्यों की ओर से उपेक्षा का भाव उसे कमजोर करता है। संबंधों का निर्वाह करते हुए स्त्री अपने अस्तित्व को खो देती है।

आधुनिक समाज में स्त्री ने अपनी सहभागिता का दायरा विस्तृत किया है जिससे वह राजनीति में भी सक्रिय भूमिका निभाने लगी है जिससे उनकी समस्याओं का समाधान आसानी से हो सकता है। वर्तमान में राजनीतिक

दल औरतों को वोट और सत्ता के लिए प्रयोग तो करते हैं, परंतु सत्ता में भागेदारी देने से बचते हैं। मृणाल पाण्डेय के अनुसार "आबादी का पचास फीसदी भाग महिला मतदाताओं का है। लेकिन चुनावों में स्त्रियों का सिर्फ शिखंडियों की तरह इस्तेमाल करना ही काफी है। महिलाओं के सशक्तिकरण का मुद्दा देश में औरतों की दुर्दशा के कुछ आँसू भरे किस्सों, कुछ आह भरी कविताई और ढीले-ढीले मुद्दों की पोटली के रूप में ही प्रायः देखा दिखाया जाता है। दुर्भाग्य और शक्तिहीनता के सिर्फ ऐसे हाय-हाय ब्योरे बार-बार देना अपर्याप्त तो है ही बुद्धिमती स्त्रियों के लिए अपमानजनक भी है।"[3] स्त्रियों को राजनीति और सत्ता में स्थान देने से उनकी स्थिति में सुधार होगा। आधुनिक समाज में भी पुरुष-स्त्री को समान अधिकार देने के लिए तैयार नहीं होते हैं। मन्नू भंडारी ने जीवन के विभिन्न मूल्यों को लेखन के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

पुरुष स्त्री की सत्ता को स्वीकार नहीं कर पाता। पुरुष नवीन चेतना के कारण स्त्री की गरिमा, अस्तित्व, प्रतिष्ठा से सहमत हुआ है। वह स्त्री को शिक्षा प्राप्त करने देता है। आधुनिक जीवन शैली को अपनाता है, परंतु स्त्री के बढ़ते कद से परेशान होने लगता है। पुरुष अपने अनुसार स्त्रियों को नियंत्रित करना चाहता है। आधुनिक परिवेश में पत्नी की पुरातन सीमा में तनिक भी ढील देने को तैयार नही है और उनका कर्ता पुरुष अपनी अहमन्य परंपरा पर दृढ़ रहते हुए, पत्नी को अपने संकेत पर ही जीने को मजबूर करना चाहता है। पत्नी घर से बाहर के परिवेश में कार्य करती है, परंतु उन्हें राजनीतिक गतिविधियों में सहभागिता नहीं मिली। 'उजली नगरी चतुर राजा' नाटक में बड़ा मंत्री कहता है कि "बिना खर्चे के भी कोई चुनाव जीता जा सकता है क्या महाराज! खर्च तो करना ही पड़ता है, हमने भी किया।"[4] इस नाटक में चुनाव प्रक्रिया में हो रहे व्यय और गोरख धंधों को प्रस्तुत किया गया है। राजनेताओं के कार्यों की सत्यता को उन्होंने प्रस्तुत किया है। "बड़ा मंत्री-चुनाव की भूमिका तैयार करने के लिए दस महीने पहले गरीबों की आठ सौ झोंपड़ियों को पक्का करवा कर मकान नहीं बनवाए उनके लिए। हिसाब खजांची को दे दिया था। (खजांची सिर हिलाता है।) राजा- (आश्चर्य से) आठ सौ मकान? यह तो बड़ा घाटे का सौदा रहा। बड़ा मंत्री- कच्ची गोलियाँ नहीं खेली महाराज।

मकान बना दिये... लोगों को वहाँ बसा दिया, पर लिखा-पढ़ी कुछ की ही नहीं। वो खुश की मकानों में रह रहे हैं और हम खुश कि वोट भी झटक लिए और मकान तो हमारे के हमारे ही रहे। जब चाहें उन्हें निकाल बाहर करें।"[5] मन्नू भंडारी ने अपने नाटकों में समकालीन राजनीतिक माहौल को अभिव्यक्त किया है। आम आदमी को लालच देकर नेता चुनाव जीतने का प्रयास करते है।

आधुनिक जीवन की समस्याओं को समकालीन नाटकों में चित्रित किया गया है। मन्नू भंडारी ने नाटकों में राजनीतिक भ्रष्टाचार को उद्घाटित किया है। विश्व और भारतीय प्राचीन परंपराओं में स्त्रियों को राजनीति से दूर रखने का प्रावधान बना हुआ है। इस नियम के विरुद्ध स्त्रियों ने आवाज उठाई जिसे महिलाओं की सहभागिता भी राजनीतिक क्षेत्र में बढ़ने लगी है। स्त्री अपने परिवार, संबंधों और समाज में राजनीतिक गतिविधियों में सहभागिता करती रही हैं। समाज में एक धर्म के अनुयायी दूसरे धर्म के लोगों को अपना धर्म छोड़कर दूसरे धर्म में शामिल होने के लिए प्रेरित करते हैं। धार्मिक भेदभाव का राजनीतिकरण किया जाना सामाजिक संरचना को प्रभावित करता है। राजनीतिक दल धार्मिक तनाव फैलाकर अपना हित साधने का प्रयास करते हैं। राजनीतिक दल हमेशा से वर्ग विभाजन, धार्मिक भेदभाव और क्षेत्रीय परिस्थितियों के नाम पर लाभ उठा रहे हैं। इस राजनीतिक चेतना के प्रभाव में धर्म से संबंध रखने वाले लोग भी सामान्य जन को धर्म परिवर्तन करने के लिए प्ररित करने लगते हैं।

मन्नू भंडारी ने अपने नाटकों में औद्योगिक विकास के प्रभाव का चित्रण किया है। उन्होंने स्वतंत्रता के बाद की स्थितियों को प्रस्तुत किया है। मन्नू भंडारी का नाटक 'बिना दीवारों के घर' में औद्योगिक विकास का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। भारतीय संरचना में परिवार की जो अवधारणा रही उसके परिवर्तित स्वरूप को नाटक में प्रस्तुत किया गया है। उन्होंने विकसित समाज में स्त्री-पुरुष दोनों के नौकरी पेशा जीवन को चित्रित किया है। सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए पुरुष अपने परिवार की स्त्रियों को पढ़ा-लिखाकर नौकरी करना चाहता है। आधुनिक जीवन और औद्योगिक विकास का प्रभाव पारिवारिक स्थितियों पर पड़ा है। नौकरी पेशा स्त्रियों की बढ़ती प्रतिष्ठा के कारण पुरुषों के अहम पर चोट होती है,

जिसके चलते पति-पत्नी के संबंधों में तनाव उत्पन्न होने लगता है। यह नाटक औद्योगिक विकास के प्रभाव से उत्पन्न परिस्थितियों को उजागर करने का प्रयास करता है।

अजित अपनी पत्नी को पढ़ा-लिखाकर नौकरी कराता है परंतु शोभा की नौकरी और समाज में बढ़ती प्रतिष्ठा से आहात होने लगता है। शोभा को प्रिंसिपल बनाने से अजित को अपने सम्मान में कमी प्रतीत होती है। सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों में स्त्रियों की बढ़ती प्रतिभागिता से पुरुष वर्ग आहात होने लगता है। इस नाटक में औद्योगिक क्रांति का प्रभाव सामाजिक जीवन को चित्रित किया है। नौकरी करने के कारण शोभा अपने घर को पूरा समय नहीं दे पाती जिसके चलते अजित को उसका नौकरी करना अच्छा नहीं लगता। अजित कहता है "मैं चाहता हूँ मेरा घर-घर हो-कोई ऑफिस या होटल नहीं। थका-माँदा मैं ऑफिस से लौटकर आऊँ तो मेरी भी इच्छा होगी कि मेरी पत्नी-(बात बीच में ही छोड़ देता है) पर यहाँ तो जब भी आओ यही सुनने को मिलता है, अभी वे मीटिंग में गई हैं, या कि इतने जरूरी काम में हैं कि उन्हें बात तक करने की फुर्सत नहीं है।"[6] अजित को शोभा का व्यस्त होना खटकने लगता है जिसके कारण वह शोभा को घर के कामों तक सीमित रखने के लिए वह उसे ताने मारने लगता है। पुरुष आधुनिक होने के लिए स्त्रियों को छूट तो देना चाहता है, लेकिन उसके बढ़ते स्वरूप से भी परेशान होने लगता है।

"अजित और शोभा एक ही घर और एक ही छत के नीचे रहते हुए एक दूसरे से अजनबी हो जाते है। शोभा यद्यपि नौकरी करने के कारण आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो चुकी है परंतु उसे अनुभव होता है कि वह अजित से कटकर अपनी धुरी से बुरी तरह उखड़ गयी है।"[7] शोभा को भी अपने परिवार से दूर होने और जिम्मेदारियाँ नहीं निभाने से परेशान होती है। उसको नौकरी करने से समाज में प्रतिष्ठा और अस्मिता मिलती है परंतु घर और पति की इच्छाओं से टूट जाती है। समाज के परिवर्तित जीवन मूल्यों को इस नाटक में अभिव्यक्त किया गया है। जिसने औद्योगिकरण और नगरीकरण की प्रक्रिया के परिणाम को प्रस्तुत किया गया है। शोभा के माध्यम से नाटककार सामाजिक और औद्योगिक प्रभाव को चित्रित करती हैं। शोभा कहती है "जितना जितना वह ऊपर से बढ़ती जा रही है,

भीतर से उतनी ही उसकी जड़ें कटती जा रही है और अपनी धरती से वह उखड़ती जा रही है।"[8] नाटककार ने नाटक के माध्यम से आर्थिक रूप से अपने पैरों पर खड़ी स्वतंत्र व्यक्तित्व सम्पन्न पत्नी को प्रस्तुत किया है। नाटक में चित्रित स्त्री दोहरी मानसिकता वाले पति की ईच्छा, अहं के कारण त्रस्त दिखाई गयी है। समाज की पारंपरिक स्थितियों के बदलते स्वरूप से बढ़ती स्त्रियों की पहचान ने पुरुष वर्ग को अपने आत्मसम्मान में कमी का आभास होता है। आधुनिक समाज में स्त्रियों को अपने अस्तित्व और चेतना के लिए प्रेरित किया गया है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद स्त्रियों की आर्थिक स्थितियों साहित्य के माध्यम से चित्रित किया गया है। साहित्य और समाज का संबंध प्रारंभ से ही देखने को मिलता है। सामाजिक गतिविधियों को साहित्य में स्थान प्राप्त होता रहा है। स्त्रियों के आर्थिक फैसलों में सहभागिता को लेकर भी साहित्य में गंभीर लेखन किया गया है। स्त्रियों में जागृति, चेतना और आत्मविश्वास की भावना को बढ़ावा दिया है। मन्नू भंडारी ने स्त्रियों की आर्थिक स्थिति को अपने नाटकों में अभिव्यक्ति प्रदान की। स्त्रियों के जीवन में शारीरिक और प्राकृतिक कमजोरियों को रुकावट मानकर उन्हें हमेशा दोयम दर्जे पर रखा जाता रहा। आधुनिक जीवन शैली के कारण स्त्रियाँ अपने अधिकारों और फैसलों को स्वयं लेने में सक्षम होने लगी। मन्नू भंडारी के नाटक 'बिना दीवारों के घर' में नौकरी पेशा स्त्री के जीवन की समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है। परिवार और नौकरी के बीच दोहरी भूमिका में उसका अपना व्यक्तित्व समाप्त सा होने लगता है। पति और बच्चे की जिम्मेदारियों के साथ नौकरी करते हुए वह दुविधाओं में घिरी दिखाई देती है।

समाज के दोहरे मानदंडों के बीच स्त्री अपने कर्तव्यों का निर्वाहन करती है। शोभा नौकरी करने के कारण आर्थिक रूप से मजबूत है, वह अपने फैसलों को कठोरता से लेती है। अजीत शोभा की नौकरी में तरक्की से कमजोर होने लगता है। उसके मन में शोभा के आर्थिक मजबूत होने के कारण हिन भाव का जन्म हो जाता है। अजीत आधुनिक पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करता है, जो स्त्रियों को शिक्षा प्राप्त करने और नौकरी करने के पक्ष में है। "नारी पुरुष की बराबरी करने के लिए पढ़कर नौकरी

करने लगी तो पुरुष से आगे निकाल गयी। तब वह पुरुष के अहं के लिए चुनौती बन गई।"[9] पुरुष स्त्री को शिक्षित करना चाहता है, उसको आर्थिक लाभ के लिए नौकरी करने की छूट देता है। स्त्री के नौकरी और समाज में बढ़ते कद से परेशान होने लगता है। स्त्री के आर्थिक फैसलों को भी स्वयं लेना चाहता है, लेकिन नौकरी पेशा स्त्री अपने अधिकारों के लिए जागरूक होती है। पुरुष को स्त्री का आर्थिक फैसलों में आत्मनिर्भर होना उचित नहीं लगता। अजित के संदर्भ में कपिला पटेल ने लिखा है "वह आधुनिक नई पीढ़ी के पुरुषों के उस वर्ग का प्रतिनिधि है जो स्वातंत्र्योत्तर समाज की आधुनिक दौड़ में पत्नी को उच्च शिक्षा प्रदान कर अपने समकक्ष लाना पसंद करते हैं, किंतु आधुनिक परिवेश में पत्नी की पुरातन सीमा में तनिक भी ढील देने को तैयार नहीं है और उनका कर्ता पुरुष अपनी अहमन्य परंपरा पर दृढ़ रहते हुए, पत्नी को अपने संकेत पर ही जीने को मजबूर करना चाहता है।"[10] अजित भी शोभा को बंधनों में रहकर कार्य करने देने के पक्ष में है। शोभा के आत्मनिर्भर होने से उसके पुरुषत्व को चोट पहुँचती है।

आधुनिक साहित्य में स्त्रियों को जागरूक करने का प्रयास हुआ है। मन्नू भंडारी ने परिवार में स्त्रियों की भूमिका के बढ़ते स्वरूप को केंद्र बनाकर नाट्य लेखन किया। स्त्रियों ने परिवार, संबंधों, समाज, राजनीतिक और आर्थिक रूप से परिवार को सम्मान दिलाने का प्रयास करती हैं। मन्नू भंडारी का नाटक 'बिना दीवारों के घर' में आधुनिक नौकरीपेशा स्त्री का चित्रण किया गया है। स्त्री अपने परिवार और नौकरी की जिम्मेदारियों को एक साथ निभाती हैं। उसकी इच्छा के बिरुद्ध स्त्री कोई निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र नहीं है। आधुनिकता ने समाज के विकास को बढ़ावा दिया जिसमें स्त्री अपने अधिकारों की माँग करते हुए घर की चार दीवारी को लाँघ कर सड़कों पर उतरी। अजित पढ़ा लिखा आधुनिक जीवन शैली को मानने वाला व्यक्ति है। उसने शोभा को शिक्षित करने और नौकरी करने की स्वतंत्रता प्रदान की। नौकरी करने से परिवार में शोभा का कद बढ़ने लगता है। अजित शोभा के परिवार और समाज में बढ़ते कद से विचलित होने लगता है। घर की सभी जिम्मेदारियाँ शोभा पर ही रहती हैं। अजित और शोभा के संवाद से ज्ञात होता है पुरुष वर्ग हमेशा स्त्रियों को नौकर

बनाकर ही रखना चाहते हैं...।

"अजित : अरे शोभा, कमीज में बटन भी लगाकर नहीं रखे! देखना, जरा जल्दी से-

शोभा : हद है! यानी कि आप अपने बटन भी नहीं लगा सकते?

अजित : अब तुम चाहे कुछ भी कह लो, पर इस सबके लिए जिम्मेदार तुम ही हो, समझीं!

शोभा : हाँ, सो तो हूँ ही। दुनिया के किसी भी कोने में कोई भी खराब काम हो, जिम्मेदार तो शोभा ही होगी। घर का कम ठीक समय पर नहीं होता, मैं जिम्मेदार; तुम अपना काम नहीं करते, मैं जिम्मेदार-"। परिवार में आर्थिक अधिकारों और राजनीतिक सहभागिता के कारण स्त्री को सम्मान दिया जाता है। स्त्रियों को परिवार के कार्यों से बाहर निकाल कर पहचान बनाने के अवसर प्राप्त हुए हैं। वर्तमान में स्त्रियों के सामने राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक परिवर्तन जितनी क्षिप्रता से हो रहे हैं, उसमें आधुनिक स्त्रियों का उत्तरदायित्व बढ़ गया है। आज स्त्रियों को परिवार में आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक फैसले लेने की स्वतंत्रता प्राप्त हुई है। 'बिना दीवारों के घर' नाटक में स्त्री अपनी इच्छाओं को रोककर रखती है उसे पुरुष से किसी कार्यक्रम में भाग लेने से पहले इजाजत लेनी पड़ती है। शोभा अपनी इच्छा के विरुद्ध अजित के कारण समारोह में गाना गाने से मना कर देती है। अजित आधुनिक और शिक्षित पुरुष होने के बाद भी शोभा को घर की सीमाओं में रखना चाहता है। आधुनिक समाज में आर्थिक और सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि के लिए शोभा को बाहर जाने देता है लेकिन उसके व्यस्त होने के कारण से वह पारंपरिक भारतीय पुरुष की मानसिकता दिखाने लगता है।

"शोभा : नहीं, बात तो नहीं हुई, ठहरी ही तो जरा-सी देर... मुझे कल शाम को अपने समारोह में गाने का निमंत्रण देने के लिए आई थी।

अजित : पर तुम तो उसके लिए पहले ही मना कर चुकी हो? कल ही तो कोई आया था बुलाने।

शोभा : इसलिए तो वह खुद आई।

अजित : और तुमने हाँ भर दी होगी?

शोभा : नहीं, इनकार कर दिया।

अजित : क्या कहा?

शोभा : कह दिया मेरे पास समय नहीं है।

अजित : हाँ, और क्या? आखिर कहाँ-कहाँ जाएँ और क्या-क्या करें? कॉलेज, बच्ची और घर, यही काफी है। फिर इन सब में जाने लगा तो कोई अंत ही नहीं। मीना ने बुरा तो नहीं माना।"[12] अजित को शोभा का व्यस्त रहना अच्छा नहीं लगता। शोभा के समारोह में भाग लेने से अजित परेशान हो जाता, जिसके कारण वह समारोह में गाने से मना कर देती है। आधुनिक समाज में भी स्त्रियों को अपने फैसलों के लिए पुरुष की इच्छा का सम्मान करना पड़ता है। शोभा कहती है "एक बात पूछूँ? आपको घर का इतना ख्याल है, जीजी का ख्याल है, अपना और अप्पी का ख़याल है, पर कभी मेरा भी ख्याल किया है आपने? कभी मेरी भावनाओं को भी समझने की कोशिश की है? मेरी अपनी भी कुछ आकांक्षाएँ हैं, आपने जीवन का कोई स्वप्न है। इस घर की चहारदीवारी के परे भी मेरा अपना कोई अस्तित्व है, और मैं चाहती हूँ कि-"[13] परिवार की सभी जिम्मेदारियाँ स्त्रियों को ही देखनी पड़ती हैं। घर के भीतर पुरुष का आधिपत्य बना रहता है। स्त्री के द्वारा पुरुष के घर आने पर उसकी सेवा नहीं करने से तनाव उत्पन्न हो जाता है। मन्नू भंडारी ने नाटक के माध्यम से परिवार में स्त्री की भूमिका को चित्रित किया है।

आजादी के बाद उत्पन्न परिस्थितियों ने भारतीय जन-मानस के जीवन स्तर को प्रभावित किया। इसके प्रभाव से मनुष्य आधुनिक जीवन शैली की ओर आकर्षित हुआ। पुरुष और स्त्री दोनों की सामाजिक मूल्यों और जीवन शैली पर प्रभाव पड़ा। "सठोत्तर हिंदी नाटकों में नारी का सामाजिक स्वरूप का व्यापक चित्र अंकित किए गए हैं। बौद्धिक एवं वैज्ञानिक विकास के साथ समाज की मानसिकता में पर्याप्त परिवर्तन आया है। समाज में नारी स्वतंत्रता को प्रोत्साहन मिला है।"[14] नाटकों के माध्यम से स्त्रियों और सामाजिक परिवेश को उजागर करने का प्रयास किया गया है। मन्नू भंडारी के नाटक 'बिना दीवारों का घर' में स्त्री की सामाजिक प्रतिष्ठा उसके पति को परेशान करती है। नाटक के माध्यम से समाज और स्त्री-पुरुष के बदलते रिश्तों को चित्रित किया गया है। सामाजिक संरचना के परिवर्तित

मूल्यों ने परिवार में तनाव को उत्पन्न किया जिसके कारण पति-पत्नी के संबंधों में टकराव देखने को मिलता है। 'बिना दीवारों के घर' नाटक में सामाजिक संरचना के इस बदलाव को प्रस्तुत किया गया है। शोभा का अजित के प्रश्नों का उत्तर देने भी स्त्री और सामाजिक संरचना के बदलाव के कारण देखने को मिलता है। नाटक के प्रारंभ में ही अजित और शोभा के संवाद से ज्ञात हो जाता है कि नौकरीपेशा स्त्री के लिए घर कि जिम्मेदारियों को निभाना कठिन होता है।

"अजित : एक घंटा हो गया, कहीं ब्लेड का पता नहीं और तुम हो कि वहाँ बैठकर आलाप रही हो-

शोभा : ओ हो! तो अब आपकी चीजें ठिकाने पर रखने का काम भी मेरा है?

अजित : अरे, मेरी चीज तुम्हारी चीज क्या होता है? सारी चीजें घर की हैं, और घर की हर चीज ठिकाने पर है या नहीं, यह देखना औरत का काम है। बोलो, है या नहीं? बोलो-बोलो-

शोभा : अच्छा, मान लिया है। अब जरा यह भी बता दीजिए कि घर के आदमी का क्या काम है? घर की हर चीज को इधर-उधर फेंकते फिरना और फिर दुनिया-भर का शोर मचाना, क्यों?"[15]

नाटक में स्त्री पात्र अपने अधिकारों के प्रति जागरूक है जिसके चलते वह अजित से प्रश्न करती है। नाटक ने समाज की बदलती परिस्थितियों को व्यक्त करने का प्रयास किया है। स्वतंत्रता से पूर्व के समाज में स्त्रियों की स्थिति परिवार और पुरुष के कार्यों तक सीमित रही, स्वतंत्रता संग्राम में भी स्त्रियों को सहायक ही बनाया गया। स्त्रियाँ देख सकती है, परंतु बोलने का अधिकार उन्हें नहीं दिया गया। "समाज में प्रचलित प्राचीन मान्यताएँ ही स्त्रियों पर लागू होती रहीं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद स्त्रियों में शिक्षा के कारण होने वाले बदलाव ने उन्हें आवाज उठाने और प्रश्न करने का अधिकार प्रदान किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत सामाजिक परिवर्तनों ने स्त्री को आत्मनिर्भर बनाया। बदलते जीवन परिवेश और जीवन-मूल्य ने नारी की सोच को बदल डाला। परिणामस्वरूप वह उसके अनुकूल होकर न रह पाई और उसका घर टूट कर बिखरने लगा। उनके नाटक की नारी परिस्थिति से समझौता नहीं कर पाती और अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व का

दावा करते हुए घर की छत से भी वंचित हो जाती है।"[16] बदलती जीवन पद्धति के कारण स्त्री भी अपने अस्तित्व और अधिकारों के प्रति जागरूक प्रतीत होती है। नाटक की स्त्री पात्र समाज के साथ-साथ बदलने का प्रयास करती है।

निष्कर्षतः महानगरों की सामाजिक स्थिति तीव्र गति से प्रभावित हुई है। जिसका प्रभाव मध्यवर्ग और निम्न वर्ग अपने जीवन स्तर को उच्च वर्ग के समान बनाने के प्रयास करता है। अजित और शोभा नौकरीपेशा होने के कारण नौकर रखना चाहते है। मन्नू भंडारी के इस नाटक में मध्यवर्गीय परिवार के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन को चित्रित किया गया है। समाज में प्रत्येक समस्या के लिए नारी को ही दोषी माना जाता है। वैद्यकीय शास्त्र के नए-नए अनुसंधानों से यह सिद्ध हुआ है कि संतांहिनता के लिए मात्र नारी दोषी नहीं होती, बल्कि पुरुष भी जिम्मेदार होता है। इसी प्रकार पुरुष के सामने स्त्री की बढ़ती प्रतिष्ठा भी समस्या बन जाती है। पुरुषवर्ग अपने अहं को कमजोर नहीं होने देना चाहता। नाटकों में स्त्री को सामाजिक कार्यों में सहभागिता करते हुए प्रस्तुत किया गया है। स्त्री नौकरी और परिवार दोनों स्थलों को एक साथ देखती है। आज की स्त्री अपने अस्तित्व और पहचान के लिए कार्य करती है, जिसके परिणाम स्वरूप पुरुष समाज स्त्रियों को प्रतिद्वंदी के रूप में देखता है। मन्नू भंडारी के नाटकों में सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, परिवार और निजता के प्रश्नों को रेखांकित किया गया है। इसके अंतर्गत नाटकों में इन बिंदुओं पर विचार करते हुए ज्ञात होता है, लेखिका ने नाटकों में चित्रित स्त्रियाँ सशक्त और आधुनिक जीवन शैली को आधार बनाकर जीवन जीने का प्रयास कर रही हैं। सामाजिक संरचना के परिवर्तित स्वरूप में स्त्रियों की भूमिका का आकलन करते हुए ज्ञात होता है कि लिखिका ने सामाजिक परिवर्तन से होने वाले प्रभावों को नाटकों में प्रस्तुत किया है। आज की स्त्री प्राचीन मान्यताओं को नहीं मानती बल्कि यथास्थिति में परिवर्तन करने का प्रयास करती है। लेखिका ने स्वतंत्रता के बाद की परिस्थिति एवं स्त्री से संबंधित मुद्दों को नाटकों में स्थान प्रदान किया है। स्त्री-विमर्श को आधार बनाकर सामाजिक शोषण के विरुद्ध स्त्रियों ने आंदोलन किया है, जिसके लिए पारंपरिक बंधनों को तोड़कर स्त्रियाँ विकास कर रही है। लेखिका के द्वारा लिखे जा रहे नाटकों में स्त्रियों से जुड़ी समस्याओं को अधिक स्थान मिला है।

सन्दर्भ :

1. हिंदी साहित्य कोष, धीरेन्द्र वर्मा, पृष्ठ सं-843
2. बिना दीवारों के घर, मन्नू भंडारी, पृष्ठ सं-13
3. जहाँ औरते गढ़ी जाती हैं, मृणाल पाण्डेय, पृष्ठ सं-107
4. उजली नगरी चतुर राजा, मन्नू भंडारी, पृष्ठ सं-31
5. उपर्युक्त, पृष्ठ सं-32
6. बिना दीवारों के घर, मन्नू भंडारी, पृष्ठ सं-46
7. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी महिला नाटककारों के नाटकों में सामाजिक चेतना, श्रीमती विनोद जैन, पृष्ठ सं-44
8. बिना दीवारों का घर, मन्नू भंडारी, पृष्ठ सं-47
9. सठोत्तरी हिंदी नाटकों में नारी, नागरत्ना एन. राव, पृष्ठ सं-124
10. समकालीन हिंदी नाटकों में सामाजिक चेतना, डॉ. कपिला पटेल, पृष्ठ सं-49
11. बिना दीवारों के घर, मन्नू भंडारी, पृष्ठ सं-13
12. उपर्युक्त, पृष्ठ सं-20
13. उपर्युक्त, पृष्ठ सं-46
14. सठोत्तरी हिंदी नाटक नारी-चित्रण, डॉ. अनुपमा धनावड़े, पृष्ठ सं-19
15. बिना दीवारों का घर, मन्नू भंडारी, पृष्ठ सं-12
16. सठोत्तर नाटकों में नारी, नागरत्ना एन. राव, पृष्ठ सं-125

मन्नू भंडारी के नाटकों में अभिव्यक्त नारी जीवन का संघर्ष

-डॉ. मोहित मिश्रा
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद

सामाजिक जीवन को समझने के लिए मानव सभ्यता के विकास को भी समझना आवश्यक हो जाता है। नारी अस्मिता के सामाजिक संरचना को आधुनिक संदर्भों में भी प्रस्तुत किया गया है। सामाजिक संदर्भ यानी विवाह, आर्थिक, राजनीतिक, परिवार नामक सामाजिक संस्था में नारी की भूमिका को अभिव्यक्ति दी है। "सारी चेतना जो व्यक्ति की न होकर एक ही काल में अनेकानेक व्यक्तियों अथवा समुदाय-समाज, राष्ट्र अथवा संपूर्ण मानवजाति की सम्पति हो, सामूहिक चेतना है। राज्य, धर्म, विज्ञान आदि विषयक व्यापक धारणाएं भी सामूहिक चेतना के अंतर्गत आती है। समाज में नए मूल्यों की स्थापना के समस्त प्रयासों को सामूहिक चेतना से टकराना पड़ता है। प्राय: यह देखने में आता है कि समाज विशेष की दार्शनिक, राजनीति, साहित्यिक मान्यताएं तो परिवर्तित हो जाती हैं परंतु सामाजिक चेतना स्थाई बनी रहती है। इसके परिणाम स्वरूप कलांतर में नई मान्यताएं या तो अत्यंत निर्बल होकर नष्ट हो जाती है या उनका क्रांतिकारी रूप लुप्त हो जाता है और वे सामूहिक चेतना द्वारा ग्राह्य रूप में पर्णित हो जाती है।"[1] नारी अस्मिता से जुड़े प्रश्नों पर विचार करने के लिए सामाजिक संदर्भ का प्रयोग व्यावहारिक रूप में किया जाता है, क्योंकि समाज में रहने के लिए नारी को समाज की अव्यवस्थाओं से जूझना पड़ता है। अस्तित्व के संकट ने उसे आंदोलन करने के लिए प्ररित किया।

मन्नू भंडारी का नाटक 'बिना दीवारों के घर' में मध्यवर्गीय परिवार की समस्याओं का चित्रण किया गया है। यह नाटक वैवाहिक जीवन की परिवर्तित सामाजिक संरचना को चित्रित करता है। इस नाटक के पात्रों